नीम का पेड़

नवीन जोशी

उस पंचायती नीम के पेड़ की आदत खूब थी,
जहाँ वकील-जज अपने वो अदालत खूब थी।
जिसके चारों और दिनभर जमघट रहता था,
वह पेड़ गाँव की लज्जा का घूघंट लगता था।
उस पर जंगली कबूतरों के जगमगाते घोंसले थे,
उसके नीचें इंसाफ की जीत सच के हौंसले थे।
वहाँ अमीर की ख़बर गरीब की हिफाजत खूब थी।

उस पंचायती नीम के पेड़ की आदत खूब थी।
वो ताश खेलनें वालों की आवाजें टकराती थी,
तब सारे गम छिप जाते जब यारी मुस्काती थी।
उन दिनों तो वहाँ हर रोज ही मेला लगता था,
जब खिलखिलाते सावन में झूला लगता था।
वो बूआ के हिण्डोलें देने की नजाकत खूब थी।

उस पंचायती नीम के पेड़ की आदत खूब थी।
उनके आगे सब शानोशौकत-आराम झूठे जाते थे,
उस के नींचे निशाना लगा खूब कंचे लूटे जाते थे।
कुछ ज्ञान की बातें होती कुछ झूठी फेंका करते थे,
वहाँ बैठ बुजुर्ग दूसरे की घरवाली देखा करते थे।
दादाओं पर नखरीली दादीयों की कयामत खूब थी।

वो पंचायती नीम के पेड़ की आदत खूब थी।